इकाई 1 आधुनिक काव्य विधायें– गद्य रचना, पद्य रचना, नाट्य रचना

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 आधुनिक काव्यविधा

1.2.1 गद्य रचना

1.2.2 पद्य रचना

1.2.3 नाट्य रचना

1.3 सारांश

1.4 शब्दावली

1.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

1.6 बोध प्रश्न

1.0 उद्देश्य

आधुनिक काव्यविधा से सम्बन्धित इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप :

- संस्कृत साहित्य की आधुनिक काव्यरचना विधा का परिचय दे सकेगें।
- गद्य रचना की आधुनिक विधा को भलीभॉति समझा सकेगें।
- पद्य रचना की आधुनिक विधाओं का उल्लेख कर सकेगें।
- आधुनिक काव्यविधा के अन्तर्गत नाट्यरचना के स्वरूप का वर्णन कर सकेगें।
- संस्कृत साहित्य की आधुनिक परम्परा में गद्य,पद्य और नाट्य रचना की विधाओं का सम्यक् विश्लेषण कर सकेगें।

1.1 प्रस्तावना

वैदिक काल से लेकर आजतक वस्तुतः संस्कृत जगत में आधुनिक जैसी बात नहीं होती। फिर भी 16 वीं शताब्दी के बाद संस्कृत जगत में पद्यकाव्य, गद्यकाव्य तथा नाटक के रूप में जो रचनाएं प्रकाश में आयीं उन्हीं का संक्षिप्त वर्णन इस इकाई के वर्णन में प्रमुखता से प्रस्तुत किया जा रहा है।

17 वीं शताब्दी के समर्थ कवि और अन्तिम काव्यशास्त्री पण्डितराज जगन्नाथ ने किसी महाकाव्य की रचना नहीं की किन्तु वे भी पद्यरचना में प्रवृत्त थे। भामिनी विलास इसका उदाहरण है। इन्हीं के बाद नीलकण्ठ दीक्षित ने 'शिवलीलार्णव' नामक महाकाव्य लिखा। यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए की संस्कृत जगत में पद्य रचना सभी शताब्दी में हुई है और महाकाव्य भी लिखे गये हैं।

गद्य साहित्य में भी अग्निपुराण के भीतर विषय और शैली के आधार पर गद्यकाव्य के भेदों का वर्णन है। श्रीभ्दभागवत में भी गद्य है। आगे चलकर सुबन्धु, बाणभट्ट से

लेकर अम्बिकादत्त व्यास तक आधुनिक गद्य की विधा का विस्तार है। नाट्यसाहित्य में भी इसका अभाव नहीं है। नाटक, प्रहसन आदि रूपक की विविध विधाएं उन्नीसवीं, बीसवीं शती में उपलब्ध हैं। उक्त तीनों विधाओं में उपलब्ध विशाल साहित्य में से कुछ प्रमुख अंशों को आपके अध्ययन के लिए इस इकाई में प्रस्तुत किया जा रहा है।

1.2 आधुनिक काव्यविधा

संस्कृत साहित्य की लम्बी काव्यविधा में परवर्ती काल में महाकवि श्रीहर्ष का नैषधीयचरित है जिसमें उन्होंने चमत्कार प्रदर्शन की शैली द्वारा उस कालखण्ड के सभी कवियों के साहस को कम किया। रचना विधा में इनके उपर उठना अन्यों के लिए कठिन हो गया। 1857 की क्रान्ति के बाद पूरे राष्ट्र में अंग्रेजों का शासन स्थापित हुआ। अंग्रेजी शासन के विरूद्ध क्रान्ति की चिंगारी के रूप में भारतीय जनचेतना के नये–नये भाव उदित हुए, जिनका प्रभाव लेखकों पर भी आया। संस्कृत के साहित्यकारों के पास अपनी भावना को व्यक्त करने के लिए भाषा और साहित्य दोनों उपलब्ध थे किन्तु इसी में दूषित प्रवृत्ति का शिकार होने के कारण अंग्रेजो की प्रशस्ति में भी पद्य रचना की। नैषधीयचरित के बाद 18 वीं शताब्दी तक के महाकाव्यों में कोई विशिष्ट रचना नहीं आ पायी क्योंकि कवियों ने काव्य निर्माण में केवल स्थिति का निर्वाह किया और आश्रयदाताओं की प्रशस्ति लिखा। जो लोग ऐसा नहीं किए वे किसी देवी–देवता के चरित्र का गान किए। 19वीं शताब्दी में भारत पश्चिमी सभ्यता के सम्पर्क में ठीक से आया। ज्ञान–विज्ञान का चमत्कार फैलाने के लिए अंग्रेजी भाषा माध्यम बन गयी। संस्कृत के कवियों का मन भी इससे प्रभावित हुआ और आगे चलकर राष्ट्रभक्त नेताओं के, समाज सुधारकों के जीवन को लेकर ही कवियों में रचना की होड़ मच गयी। गद्यविधा के लेखक को भी इस परिधि में देखा गया, नाट्यविधा के कवि को भी इस वातावरण से अछूता नहीं माना गया। अब आपके अध्ययन के लिए इस इकाई में आधुनिक काव्यविधा की तीन प्रमुख विधाओं का वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है। इकाई के शीर्षक के अनुसार सर्वप्रथम गद्यरचना का अध्ययन कीजिए–

1.2.1 गद्य रचना

संस्कृत वाड्.मय में गद्य साहित्य की अपनी अतिरिक्त विशिष्टता है। गद्य रचना की सूचना हमें वैदिक संहिताओं से ही मिलनी प्रारम्भ हो जाती है। संस्कृत साहित्य का गद्य प्राचीनता के लिए, प्रौढ़ता के लिए तथा अपनी तथा अपनी उपादेयता और भाषाभिव्यक्ति के लिए गौरवपूर्ण है। वैदिक काल से मध्यकाल तक गद्य के विकास का बहुत बड़ा इतिहास है। वैदिक काल का गद्य, लौकिक संस्कृत का गद्य अथवा पौराणिक गद्य जो भी हो उनमें बोलचाल, प्रौढ़ता, समासबहुलता, सौन्दर्य, मोहकता तथा आलंकारिकता विद्यमान है। प्राचीन गद्यकारों में बाणभट्ट का नाम अतिप्रसिद्ध है। अभिलेखों में भी गद्य की विद्या पायी गयी है। बाणभट्ट तो बाद में आते हैं, पतंजलि, शबरस्वामी, शंकराचार्य और जयंतभट्ट का नाम पहले से प्रसिद्ध है। महाभाष्य गद्यात्मक है। शबरस्वामी मीमांसक हैं।

कर्ममीमांसा का गद्यात्मक भाष्य उपलब्ध है। शंकराचार्य ने उपनिषदों पर गद्य शैली में ही भाष्य लिखा है। न्यायशास्त्र में भी गद्य है। सुबन्धु, कृत वासवदत्ता लौकिक संस्कृत गद्यकाव्य की विधा के उत्कर्ष काल की रचना है। इस प्रकार गद्यविधा की बहुत बड़ी परम्परा है किन्तु यहॉ प्रमुख आधुनिक गद्यविधा का परिचय आपके अध्ययन का लक्ष्य है।

आधुनिक गद्यविधा

सुबन्धु, बाण और दण्डी की परम्परा का अनुशरण परवर्ती काल के कवियों ने किया और वे गद्यरचना में प्रवृत्त हुए जिनका क्रमशः संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

विषय और शैली के आधार पर अग्नि पुराण में गद्यकाव्य के आख्यायिका, कथा, खण्डकथा, परिकथा और कथानक इन पॉच भेदों का वर्णन प्राप्त होता है। (अग्निपुराण 174 काव्यादिलक्षणम् 12–17) छन्दों के बन्ध से रहित पदसमूह को गद्य कहते हैं। इसके चार प्रभेद इस प्रकार है– मुक्तक, वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय और चूर्णक। दण्डी के काव्यादर्श में इन सब भेदों की चर्चा मिलती है। दण्डी ने माना है कि खण्डकथा, परिकथा तथा कथानक आदि कथा और आख्यायिका में ही आते हैं। इन्हीं में उनका अन्तर्भाव होता है। इस क्रम में आधुनिक गद्यकारों के अध्ययन के लिए हम सुबन्धु, बाण और दण्डी से लेकर प्रमुख आधुनिक गद्यकारों का अध्ययन इस प्रकार करेंगें–

सुवन्धु

ईसा की 6 वीं शताब्दी में सुबन्धु का कार्यकाल निर्धारित किया जाता है। इनकी रचना वासवदत्ता है। इसमें चिंतामणि राजा का पुत्र कन्दर्वकेतु के साथ कुसुमपुर के राजा श्रृंगाारशेखर की राजकुमारी वासवदत्ता के साथ प्रणयकथा का वर्णन है। इसमें प्रकृति से लेकर सामाजिक–सांस्कृतिक वर्णनों की प्रचुरता है।

बाणभट्ट

बाणभट्ट का समय सुबन्धु के बाद ही माना जाता है। हर्षचरित और कादम्बरी इनकी प्रसिद्ध कृतियॉ हैं।

हर्षचरित आख्यायिका है यह गद्य की एक विद्या है। इस आख्यायिका ग्रन्थ का प्रारम्भ पौराणिक शैली से है। ब्रहम्लोक में इन्द्र आदि देवताओं से घिरे ब्रह्मा कमल के आसन पर बैठे हैं जिसमें विद्यागोष्ठी चल रही है। विद्या–विवाद उत्पन्न होता है, सरस्वती का उपहास किया जाता है। सरस्वती के उपहास से क्रुद्ध दुर्वासा सरस्वती को स्वर्ग से मृत्युलोक जाने का श्राप देते हैं। सोन नदी के तट पर च्यवन ऋषि के पुत्र दधीचि के साथ सरस्वती का प्रणय आकर्षण होता है जिसके फलस्वरूप सारस्वत नाम का पुत्र जन्म लेता है। इन वर्णनों से होते हुए आठवें उच्छवास तक हर्ष की प्रतिज्ञा पूरी होने तक का उल्लेख प्राप्त होता है जो गद्यात्मक प्रबन्धकाव्य का रूप लेता है। अपने पूर्ववर्ती कवियों की प्रशस्ति का वर्णन, अपने वंश का परिचय आदि दिया जाना बाण की गद्यविधा है।

कादम्बरी कथा ग्रन्थ है, इसकी कथा पैशाची भाषा में लिपिबद्ध बृहत्तकथा से ली गयी जो गुणाढ्य की रचना है। इसकी कला का अंश वृहत्कथा के संस्कृत रूपान्तर, सोमदेव के कथासरित्सागर तथा क्षेमेन्द्र कृत बृहत्कथामंजरी से मिलता–जुलता है। कथा का प्रारम्भ विदिशा नगरी के राजा शुद्रक के प्रभाव तथा वैभव के वर्णन से होता है। इस ग्रन्थ में बाण ने महाभारत की तरह मानवीय जीवन का सर्वांगीण चित्रण प्रस्तुत किया है। यह सभी प्रकार के वर्णनों से परिपूर्ण कथाग्रन्थ है।

दण्डी का दशकुमाचरित

चौदह उच्छवासों में आख्यानों का वर्णन है। यह संस्कृत गद्य का उपन्यास है। अवन्तिसुन्दरी कथा भी दण्डी का एक ग्रन्थ है। यद्यपि मूलग्रन्थ दशकुमारचरित आठ

ही उच्छावासों में प्राप्त है। कहीं–कहीं वर्णन की दुरूहता पाठकों का मूलकथा के सूत्रों से विचलित कर देती है। दशकुमारचरित भी गुणाढ्य के वृहत्कथा से प्रेरित है। दण्डी जनता के कवि हैं। समाज के अशोभनीय कृत्यों पर दण्डी की दृष्टि है। साहित्यिक दृष्टिकोण से इसका बहुत महत्व है। समाज के निम्नवर्ग का यथार्थ और मार्मिक चित्रण इस ग्रन्थ में किया गया है। वन, पर्वत, नदी, तडाग से अलंकृत शैली में वर्णित यह ग्रन्थ नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और मनोवैज्ञानिक वर्णनों की सूचना भी प्रदान करता है।

संस्कृत गद्य के इतिहास में दण्डी के बाद 11वीं शताब्दी के धनपाल का नाम आता है। तिलकमंजरी एक कथाग्रन्थ है। जिसमें राजकुमार हरिवाहन और दैवी राजकुमारी तिलकमंजरी तथा समरकेतु और अर्धदैवी राजकुमारी मलयसुन्दरी की प्रणयगाथा का वर्णन किया गया है। इन्होंने बाण की पांचाली शैली का वर्णन किया है।

वादीभ सिंह

ये अलंकृत शैली के गद्यकार हैं। गद्य चिंतामणि इनका रोचक काव्य है। इनका विभाजन लम्भों में है। इनका समय 11वीं शताब्दी माना जाता है। गद्यचिंतामणि में माननीय जीवन का विस्तृत एवं व्यापक चित्रण है। आलंकारिक शैली है। कवि ने नये–नये शब्दों की सर्जना किया है, जिससे पुनरूक्ति दोष न हो। इस प्रबंध काव्य की शास्त्रीय सहनीयता भी है। सूर्योदय, सूर्यास्त, समुद्र, रात्रि का अंधकार, बसंत, पावस आदि का वर्णन भरा पड़ा है।

विश्वेश्वर पाण्डेय

18वीं शताब्दी पूर्वार्ध इनका समय माना जाता है, इसके पहले भी अनेक प्रकार के गद्यकारों व उनकी रचनाओं के नाम प्राप्त होते हैं। कादम्बरी की ही शैली में इन्होंने मंदारमंजरी नामक ग्रन्थ लिखा है। यह भी एक कथाग्रन्थ है, इसका प्रारम्भ प्राची दिशा के वर्णन से होता है जहॉ पर मगध प्रदेशों पुष्पपुर नाम का एक नगर था। यहॉ पर पल्लव राजा राजशेखर राज करता था। महादेवी मलयवती इनकी रानी थीं। बुद्धिनिधि नाम का प्रधान अमात्य था। राजा संतान के अभाव में दुखी था। पुत्रप्राप्ति के बाद उसका नाम चित्रभानु रखा जाता है। एक समय इन्द्र पृथ्वी पर आते हैं। चित्रभानु विद्या धरेन्द्र चन्द्रकेतुकी कन्या मंदारमंजरी को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ता है, इसी प्रकार की कथा का वर्णन किया गया है। अलंकारों का प्रयोग, भाषा का प्रवाह और प्रकृति के वर्णनों से नादीभ सिंह का यह कथा ग्रन्थ सुसज्जित है।

अम्बिकादत्त व्यास

शिवराज विजय इनका उपन्यास है। ये 20वीं शताब्दी के हैं, इन्हें 1 घण्टे में 100 श्लोकों की रचना करने की क्षमता के कारण घटिकाशतक की उपाधि से विभूषित किया गया है। शिवराजविजय इनका उपन्यास ग्रन्थ है। इस उपन्यास में कथानक की दो स्वतंत्र धाराएं हैं जिनमें एक के नायक वीर शिवाजी हैं और दूसरी के रघुवीर सिंह। स्वतंत्र होते हुए भी दोनों धाराएं एक दूसरे की पूरक भी हैं। कथानक में तीन विराम है, प्रत्येक विराम में तीन निःश्वास हैं। इनकी संरचना पांचाली रीति के आधार पर है। समासरहित पदावली का प्रयोग भी व्यास जी ने किया है। अलंकार योजना भी अनुकूल है, औचित्यपूर्ण है। शिवराजविजय के प्रायः सभी पात्र प्रतिनिधि पात्रों के रूप में चित्रित किये गये हैं। इसका प्रधान रस वीर रस है। सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्रोदय, चन्द्रास्त एवं रात्रि के मनोरम पक्षों का वर्णन कुशलता के साथ किया गया है।

संस्कृत गद्य विधा में संस्कृत गद्यकाव्यों के कथानकों का मूल प्रायः लोककथाओं से लिया गया है। कथा में उपकथा का सन्निवेश भी प्रचलित है। गद्यकाव्यों के व्यापक प्रभाव के कारण, आधुनिक संस्कृत साहित्य में व्यावहारिक गद्यशैली का अपेक्षाकृत कम विकास हुआ है। गद्य और पद्य के मिश्रण से चम्पूकाव्य बनता है। इसी को मिश्रकाव्य भी कहते हैं। यह मिश्रण रूपकों में भी मिलता है। अग्निपुराण में दो प्रकार के मिश्रकाव्यों का उल्लेख मिलता है– ख्यात एवं प्रकीर्ण। जो ख्यात मिश्रकाव्य प्रबंधात्मक होता है वही चम्पू होता है। ख्यात एवं प्रकीर्ण काव्यों के निम्नालिखित भेद प्राप्त होते हैं– (1) करम्भक (2) विरूद्ध (3)घोषणा (जयघोषणा) (4) आज्ञापत्र या दान पत्र

करम्भक– कई भाषाओं में रचित प्रशस्ति को करम्भक कहते हैं

जैसे– विश्वनाथ प्रशस्ति रचनावली।

विरूद्ध– गद्य–पद्य की मिश्र शैली में रचित राजस्तुति।

जैसे– रघुदेवमिश्र की विरूदावली।

घोषणा– शाह जी की जयघोषणा सुमतिन्द्र जय घोषणा में प्रस्तुत है।

आज्ञापत्र या दान पत्र– शिलालेखों या दानपत्रों में आज्ञापत्र या दानपत्र मिलते हैं।

इसके लिए अधिसंख्य चम्पू ग्रन्थ प्राप्त होते हैं।

1.2.2 पद्यरचना

18वीं शताब्दी के बाद क्रमशः परवर्तीकाल में महाकाव्य विधा के अन्तर्गत 'एडवर्ड वंशम्' के यत उर्वीदत्तशास्त्री तथा उनके जैसे अनेक नाम प्राप्त होते हैं जो 18 वीं शताब्दी के हैं। आधुनिक संस्कृत में पद्य रचना का कार्य 20वीं शताब्दी में सामाजिक राष्ट्रीय चेतना का सम्मिश्रण प्रतीत होता है। संक्रान्तिकाल 1707 से 1781 के रामपाणिवाद ने 'राघवीयम्' महाकाव्य की रचना की। यद्यपि ये आधुनिक संस्कृत काल की सीमा में नहीं आते। पद्यरचना के अन्तर्गत महाकाव्य रचना में हम 20वीं शताब्दी में सीधे प्रवेश करें तो पद्यरचना की विधा में महाकाव्यों की श्रृंखला बहुत लम्बी है, जिसमें विभिन्न विद्वानों के महाकाव्यों का नाम संक्षेप में संग्रहीत किया जा सकता है–

1. अखिलानन्द शर्मा उ0प्र0 – 1880 से 1955 बदायूँ

   दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य– इण्डियन प्रेस प्रयाग से 1906 में प्रकाशित, 21 सर्ग में।

2. सखाराम शास्त्री भागवत (महाराष्ट्र 1886 से 1935) अहल्याचरित महाकाव्य

3- बद्रीनाथ झॉ (विहार 1974) श्रीराधापरिणय महाकाव्य –(20 सर्गों का महाकाव्य विजय प्रेस मुजफ्फरनगर से प्रकाशित 1939)

4. पण्डिता क्षमाराव (महाराष्ट्र 1890 से 1954)तीन महाकाव्य – श्रीतुकारामचरितम्, श्रीरामदासचरितम्, श्री ज्ञानेश्वरचरितम्

5. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र (बिहार 1968), कर्णार्जुनीय महाकाव्य

6- सत्यव्रत शास्त्री (1930), श्री गुरूगोविन्दसिंहचरित 31 (1967 में प्रकाशित साहित्य अकादमी पुरस्कार 1968 में प्राप्त)

7. रेवाप्रसाद द्विवेदी (1935 म0प्र0 में जन्म) दो महाकाव्य–(1) सीताचरित (1960 सागर विश्वविद्यालय सागर की संस्कृत परिषद द्वारा प्रकाशित) (2) स्वातंत्रसम्भव – 28 सर्गो का महाकाव्य
8. राजेन्द्र मिश्र – जानकीजीवनम् महाकाव्य –(1988 में प्रकाशित)
9. हरिहर पाण्डेय– बी 27/भिनगा हाउस दुर्गाकुण्ड वाराणसी से 1985 में प्रकाशित
10- हरिनारायण दीक्षित–(1936, उ0प्र0) भीष्मचरितम् महाकाव्य–(साहित्य अकादमी प्राप्त, 1987 में प्रकाशित)

इसके अतिरिक्त लघुकाव्यविधा में भी 19वीं और 20वीं शताब्दी के अन्तर्गत अधिसंख्य रचनाएं हुईं जिनमें लघुकाव्य की प्रवृत्ति विकसित थी। संस्कृत लघुकाव्यों में भारत के सामाजिक राजनीतिक क्षीतिज पर घटित विविध घटनाओं के घात–प्रतिघातों से संस्कृत में लघुकाव्य की प्रवृत्ति का निर्धारण हुआ। घटना वैविध्य के कारण लघु काव्यों में विषय वैविध्य भी आया। बदलते हुए मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में कवियों ने मुखरित होकर लेखन किया। राष्ट्र भक्तिपरक काव्य भी 19 वीं शताब्दी में प्रारम्भ हो गये थे। अस्पृश्यता निवारण, नारी दुर्दशा, दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, आतंकवाद आदि की समस्याओं को लेकर आधुनिक कवियों ने समाज सुधार की बातों को समाज के सामने रखा। 21वीं शताब्दी के प्रारम्भ में छन्दोमुक्त–निर्बन्ध काव्य भी रचे जाने लगे। इस विधा में कृष्णलाल, देवदत्त, व्योमशेखर, मायाप्रसाद त्रिपाठी आदि रचनाकारों के नाम आते हैं जिनकी विभिन्न रचनाएं हैं। इसी प्रार बालगीत लिखने की प्रवृत्ति भी आयी है। संस्कृत में बाल साहित्य का अभाव पाया जाता था। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री तक विविध प्रकार की परम्परा चली आयी। लधुकाव्य की परम्परा से होते हुए गीतिकाव्य तक की यात्राा में आधुनिक संस्कृत साहित्य के भीतर सौ से अधिक संख्या में नाम सूचीबद्ध रूप में प्राप्त होते हैं। गीतिकाव्यों में राजेन्द्र मिश्र का नवाष्टकमालिका, पराम्बाशतकम्, शताब्दीकाव्यम्, तो स्तोत्र काव्य हैं। किन्तु गीत संकलनों में वाग्वधूटी 1978 में, मृद्वीका 1985 तथा श्रुतिम्भरा 1989 में प्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त नवीन विधाओं में चैत्रकम् (चैता), सूतीगृहगीतम् (सोहर) स्कन्धहारीयम्, नक्तकम् (नकटा) प्रचारगीतम् (पचरा), आदि विधाओं में भावबोध, लय तर्ज आदि का समावेश कवि ने किया है। इन्होंने संस्कृत में गजल विधा पर भी काम किया है, इस क्रम में पुष्पादीक्षित की अग्निशिखा नामक गीतियों का संग्रह 1984 में प्रकाशित हुआ।

रेवा प्रसाद द्विवेदी ने 'रेवाभद्रपीठम्' गीतिकाव्य लिखा। शोकगीत भी संस्कृत गीतिकाव्य में आयी है। इस प्रकार संस्कृत पद्य रचना की नवीन विधाओं के दर्शन अनेक रूपों में प्राप्त होते हैं जो अब रेडियो रूपक तथा हाईकू तक की यात्रा कर चुके हैं।

उपर्युक्त वर्णन आपके अध्ययनार्थ संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किय गये हैं। इन विषयों का विस्तार से अध्ययन आप सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में दिये गये सन्दर्भो के आधार पर कर सकते हैं।

नूतन विधाश्रित गीति काव्य

इस काव्य में पारम्परिक रचनाओं के साथ–साथ नई विधाओं में भी लेखन हुआ। शोक गीत, व्यंग्य प्रधान पद्य रचनायें भी अस्तित्व में आयीं। यद्यपि करूण रस प्रधान प्रसंग संस्कृत महाकाव्यों में अनेकशः देखे जा सकते हैं। परन्तु स्वतन्त्र रूप से विलापकाव्य या शोकगीति का प्रचलन अंग्रेजी साहित्य के एलिजी विधा का प्रभाव है। शोकगीति

काव्यों में उल्लेखनीय रचनायें हैं– करूणा, त्रिंशिका, विलापलहरी, शोकोच्छवाशः, अश्रुविसर्जनम् आदि।

विलाप काव्यों के साथ ही साथ व्यंग्य प्रधान गीतिकाव्यों की परम्परा भी इसी काल खण्ड में शुरू हुई। इस विधा में शेटायर की अवधारणा के समकक्ष युग की विसंगतियों का उद्घाटन आदि विन्दु गीतियों के केन्द्र बने। इस तरह की रचना में सूर्यग्रहणम् को रखा जाता है।

इसी सती में वस्तुनिष्ठ गीतियों के स्थान पर वैयक्तिक भावनाओं की अभिव्यक्त करने वाली गीतियां भी लिखी गयीं। इस दृष्टि से उल्लेखनीय रचना है– तिलक महाशयस्य तारागृहवासः।

सामाजिक चेतनापरक गीतिकाव्य

इस सती में कवियों ने समाज और उसकी प्रवृत्तियों, दुष्प्रवृत्तियों को पहचाना है। तथा उन विषयों पर गीतियाँ लिखा है। नूतन शिक्षा पद्धति, पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से उत्पन्न होने वाली सामाजिक दुष्प्रवृत्तियों पर कवियों में विरोध का स्वर दिखाई पड़ता है। नागरिकों की जीवनचर्या में आये परिवर्तनों को कलि परिदेवनसतकम् में चित्रित किया गया है–

सूर्योदये क्वथितबीजकषायपानं,
धौतं च सार्वदिककञ्चुकमेकवासः।
शौचं च सान्ध्यमपि नो शिवकर्म तेषां।
म्लेच्छैः सहातनमथानियमः च जग्धिः।

प्रषस्तिपरक गीतिकाव्य

संस्कृत गीतिकाव्यों में उन्नीसवीं शती में बहुत सी प्रशस्तिपरक रचनायें लिखी गयीं। संस्कृत कवियों का एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा था जिन्होंने समय–समय पर अंग्रेजी शासकों के चरित पर काव्य लिखे। इस दृष्टि से अप्पाशास्त्री राशिवडेकर का चक्रवर्तिन्याः घोषणापत्रम्, प्रिंस आफ वेल्स के भारत आगमन पर श्रीश्वर विद्यालंकार का प्रिंसपञ्चाशत्, महेशचन्द्र का अभिनन्दनपत्रम् उल्लेख्य है। 1870 में वाराणसी से प्रकाशित सुमनोऽञ्जलिः में डयूक आफ एडिनबरा' की प्रशस्ति है। मानसोपायनम् में प्रिंस आफ वेल्स की प्रशस्ति है। इस क्रम में जुबिलिगानम्, चक्रवर्तिविक्टोरिया विजयपत्रम्, आङलाधिराज स्वागतम्, एडवर्डमहोदयाभिनन्दनम्, विक्टोरियाप्रशस्ति, विक्टोरियाचरितसंग्रहः, विक्टोरिया प्रशस्तिः, राजपुत्रागमनम्, प्रिंसपञ्चाशत्, प्रीतिकुसुमाञ्जलिः, विक्टोरिया वैभवम् आदि उल्लेखनीय है।

इस काल के कवियों ने अंग्रेजों के अतिरिक्त अपने आश्रयदाता राजाओं, सामन्तों आदि को विषय बनाकर तथा उनके जीवन के विविध पक्षों पर रचनायें लिखी। इस दृष्टि से तुलाभारप्रबन्धम्, विशाखविलासः, केरलवर्म विलासः, रमेश्वरकीतिकौमुदी, शाहोः कुमारावाप्तिः, उद्वाहमहोत्सवम्, लक्ष्मीश्वरीचरितम्, जयसिंहाश्वमेधीयम, केरलविलासादि उल्लेख्य हैं।

पुनरूत्थानवादी गीतिकाव्यं–

पाश्चात्य सभ्यता के दुष्प्रभाव आंग्लशासकों के द्वारा भारतीय संस्कृति के विरूद्ध किये जाने वाले दुष्प्रचारों से आहत अनेक कवियों ने भारतीय संस्कृति की गरिमा का बखान किया है और वर्तमान की तुलना में अपनी संस्कृति की उज्जवलता और भव्यता को पुनः अपनी–अपनी रचनाओं में प्रतिष्ठित किया है। इस दृष्टि से श्रीनिवास दीक्षित का कलिपरिदेवनशतकम् अन्नदाचरण, तर्करत्न का तद्तीतमेव उल्लेखनीय हैं। भारतीयों को अपने अतीत का बोध वर्तमान में उन आदर्शों एवं जीवन मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा हो इस आशय को लेकर अन्नदाचरण कहते हैं–

यदा त्रिकालेक्षणशक्तिमन्तो ज्योतिर्विदो ज्योतिरनन्तदीप्त्या।
निरूपयन्ति स्म गतिं ग्रहाणां स्थितिं च तां तां तदतीतमेव।।
यदा कवीनां रसभावपूर्णोत्कण्ठादनन्तानि रसावशानि।
पद्यानि निःसृत्य सहस्रवक्त्रे दिदीपिरे हा तदतीतमेव।।
अनन्तभक्ताः समनन्तनादैरनन्तगीतैः समनन्तभोग्यैः।
यदार्चयन् जन्मधरां समष्ट्या गरीयसीं हा तदतीतमेव।।
हा वैदिकानां लयतानशुद्धसामादिगीतैरतिविस्मितः सन्।
विदग्धसार्थोऽपि च भारतेऽस्मिन् प्रीतिं नवामाप यदा गतं तत्।।

अर्थात् जब तीनों कालों, भूत–भविष्य–वर्तमान को देखने की सामर्थ्य वाले ज्योतिषी विद्वान् लोग लोग ज्योतिष विषय की अनन्त दीप्ति से ग्रहों की उस–उस गति और स्थिति का निरूपण किया करते थे, वह सब बीत गया। जब कवियों के रस–भाव से भरे कण्ठ से अनन्त रस–भरे पद्य निकलकर हजारों के मुखों से शोभित होते थे, हाय, वह बीत गया। जब अनन्त नादों, अनन्तगीतों तथा अनन्त अनन्त भोग्य पदार्थों से मिल–जुल कर अनन्त भक्तगण गरीयसी जन्म–भूमि की अर्चना करते थे, हाय वह बीत गया। जब इस भारत में विदग्धजनों का समूह वैदिक विद्वानों के लय–ताल से शुद्ध साम आदि के गानों से अतिविस्मित होकर अतिशय आनन्द का अनुभव करता था, हाय, वह बीत गया।)

शास्त्रपरक गीतिकाव्य

शास्त्रपरक काव्य लेखन की परम्परा प्राचीनकाल से ही संस्कृत साहित्य में विद्यमान है। उन्नीसवीं शती तो वैचारिक आलोडन और उथल–पुथल का युग था। अतः यह स्वाभाविक था कि कविता में विचारों की प्रधानता हो तथा युग के तर्कों, विवादों और संशयों के साथ–साथ कवि अपनी परंपरा में निहित विवेक का भी काव्य में उपस्थापन करें। उन्नीसवीं शताब्दी के संस्कृत काव्य की एक विशेषता यह भी है कि काशी तथा अन्य विश्वकेन्द्रों में रहने वाले इस युग के दिग्गज शास्त्रज्ञ पण्डितों ने प्रचुर मात्रा में संस्कृत में काव्य रचनायें कीं। स्वाभावतः ही ऐसी रचनाओं में शास्त्रज्ञान, पाण्डित्य तथा चिन्तन के स्वर प्रमुख हैं। पं0 गंगाधर शास्त्री का 'अलिविलासिसंलापः' इस दृष्टि से एक उल्लेखनीय काव्य है। पं0 शिवकुमार शास्त्री के 'यतीन्द्रजीवनचरितम्' काव्य में शास्त्रचर्चा और विचारविमर्श के प्रसंग बहुसंख्य हैं। नैतिक उपदेश की दृष्टि से श्री धीरेश्वर की 'विद्यामञ्जरी' इस काल में लिखी गयी रचना है।

1.2.3 नाट्य रचना

19वीं से 20वीं शती ईसवी के संस्कृत साहित्य में नाट्य साहित्य में नाट्य साहित्य की रचना अधिक मात्रा में है। यहॉ पर 1870 से 1970 ईसवी तक के कुछ प्रमुख नाट्य साहित्यकारों द्वारा अपनायी गयी विधा का वर्णन करते हुए आपको उनके बारे में जानकारी देने का प्रयास किया जा रहा है। पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ने 1880 ईसवी में 'सामवत' नामक नाटक का प्रणयन किया। इस नाटक में लम्बे–लम्बे संवाद हैं। अलंकारिक सूक्तियॉ हैं। कथावस्तु श्रृंगार रस से ओतप्रोत है। कथाविन्यास में ऋषि, तपोवन, नृत्य, गीत, संगीत, राजद्वार, देवता, भूतप्रेत सभी का समावेश है। धीवर पात्रों द्वारा मागधी प्राकृत का गीत भी गवाया गया है। यह नाटक नायिका या परकीया के विधान से दूर है फिर भी संस्कृत नाट्य परम्परा में उल्लेखनीय है। इस कालखण्ड के रचनात्मक साहित्य के प्रणेताओं में नारायण शास्त्री का नाम सर्वोपरि है कहा है। 1860 में कुम्भकोणम् में इनका जन्म हुआ था। शशि शारदीय, सूमयूर, शर्मिष्ठा विषय, कालीवि की जो धूनन, महिलाविलास, स्वैराचार, मैथीलिय आदि इनके रूपकों के नाम हैं। राजराजवर्मा केरल के मलयालम भाषी संस्कृत विद्वान रहे। 'गैर्वाणीविजय' इनका एकमात्र नाटक है। अंग्रेजी भाषा और साहित्य के अध्ययन के प्रति लोग आकृष्ट हो रहे थे, ऐसी वर्तमान दशा को प्रणयन कवि ने इस नाटक में किया है। परशुराम–नारायण पाटणकर 'वीरधर्गदर्पण' नामक नाटक की रचना इन्होंने 1905 ई0 में की जो 1907 में काशी से प्रकाशित की गई। श्रीनिवास शास्त्री कुम्भकोणम् ने 'सौम्यशोभनम्' नामक नाटक की रचना 1888 में की, कुमारसम्भव महाकाव्य की कथा को इस नाटक में नाटक का रूप दिया गया है। इसी काल में 1920 के लगभग काशी नरेश प्रभुनारायण सिंह ने 'पार्थपाथेय नामक रूपक की रचना किया।

1920 से 1950 ईसवी तक राष्ट्रीय भावनाओं के जागरण का काल आने पर गांधी जी का नेतृत्व जनता को उद्वेलित करता रहा। इस अवधि के प्रमुख नाटककार इस प्रकार हैं–

1) हरिदास सिद्धान्त वागीश 1876 ईसवी । शिवाजीचरित और मिवारप्रताप इनके नाटक हैं जो राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हैं।

2) मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक (गुजरात 1886)। इन्होंने तीन नाटकों की रचना की–

1. प्रतापविजय– 1926
2. संयोगिता स्वयंवर– 1927
3. छत्रपतिसाम्राज्यम्– 1929

इनके नाटकों में नाटक के शास्त्रीय लक्षणों का पालन भी है। इन्होंने नाटकीयता के प्रत्येक पक्ष को अपनी रचनाओं में पिरोया है।

3. मथुरा प्रसाद दीक्षित – हरदोई 1878

वीरप्रताप, गांधी विजय,शंकर विजय, भारत विजय,वीर पृथ्वीराज, मुक्त सुदर्शन इनकी नाट्य रचनाऍ हैं।

4. रमानाथ मिश्र 1904

इनकी रचनाऍ चाणक्यविजय, श्रीरामविजय, पुरातनबालेश्वर, आत्मविक्रम, समाधान, प्रायश्चित, कर्मफल, इनकी और नाट्य रचनाएं हैं। सामाजिक चिंताओं और विचारों का

प्रतिनिधित्व की रचनाएं करती हैं। इसी प्रकार 20वीं शताब्दी के नाटककारों में विश्वेश्वर, विष्णुपद भट्टाचार्य, लीलाराव के नाम आते हैं। पण्डिताक्षमाराव की पुत्री लीलाराव ने भी रूपकों की रचना की जिनमें अभिनवनाट्यशिल्प तथा हिन्दी में लिखे जाने वाले अधुनातन रूपकों की छाप है। बाल विधवा, होलिकोत्सव, जयन्तुकमाउनियाह, तुलाचलादिरोहण, मायाजाल, कपोतालय,कटुविपाक आदि नाट्य रचनाएँ हैं।

5. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य (1917 ईसवी)

इन्होंने संस्कृत में एक दर्जन के आस–पास नाटकों की रचना की है। गीतगौरांग (काव्यरूपक) सुपर्णकाभिक्षम्, सिद्धार्थचरित, शार्दुलशकट नाटक आदि। वेस्टनव्ययोग नामक नाटक में श्रमिकों द्वारा किये जाने वाले घेराव का वर्णन कवि ने किया है। इसी प्रकार आधुनिक नाट्यकारों में सुब्बाराव, विश्वनाथ मिश्र, कलानाथ शास्त्री, भगवान दास सफाड़िया, वासुदेव पाठक आदि का नाम आता है। नाट्यरचना ने भाषा की शक्ति को उजागर किया। 20वीं शती के इन वारककारों ने राष्ट्रीय एकता को पिरोया। यद्यपि तकनीकी युग के प्रभाव से पाठकों की संख्या कम होती गयी फिर भी संस्कृति की रक्षा के लिए इन रचनाओं का होना नितान्त आवश्यक है।

1.3 सारांश

आधुनिक संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत आधुनिक काव्यविधाएँ जानने के लिए आपने गद्य रचना, पद्यरचना और नाट्यरचना के क्रम में विषय शीर्षक का अध्ययन किया है। आपको अवगत होगा कि संस्कृत में पद्य रचना और गद्य रचना तथा नाट्यरचना की अत्यन्त प्राचीन विधा रही है। इस इकाई के अन्तर्गत आपने 17 वीं शताब्दी के बाद होने वाले विभिन्न प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों के क्रम में रची गयी रचना का संक्षेप में अध्ययन किया है। गद्य रचना की विधा पौराणिक काल से होकर अम्बिकादत्तव्यास तक उपन्यास की परम्परा में प्राप्त हो रही है। संस्कृत गद्य में लम्बे–लम्बे समासों की पदावली के प्रयोग के नाते सुबन्धु, बाण और दण्डी प्रसिद्ध थे जिनमें कथा, आख्यायिका आदि सभी प्रसिद्ध हुए। गद्य की नई विद्या के रूप में प्रसिद्ध उपन्यासकार पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का 'शिवराजविजयम्' गद्य की उपन्यास विद्या का अनूठा उदाहरण है। गध रचनानवीन विधा के अन्तर्गत महाकाव्य से लेकर गीतिकाव्य, लघुकाव्य, स्त्रोत्रकाव्य के अतिरिक्त राजेन्द्र मिश्र रचित गजल की नवीन विधा तक की जानकारी आपने प्राप्त की। इसी प्रकार नाट्य रचना की परम्परा में आपने राष्ट्रीय भावना के जागरणकाल से लेकर आज तक के भीतर की नाट्य कृतियों के बारे में जाना। प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप आधुनिक संस्कृत साहित्य की उक्त तीनों रचना विधाओं का संक्षेप में वर्णन कर सकेगें।

1.4 शब्दावली

घटिकाशतक – एक घण्ट में सौ श्लोकों की रचना करने के कारण दी गई उपाधि

चम्पू – जिस रचना में गद्य और पद्य दोनों का मिश्रण होता है।

विधा – रचना प्रक्रिया में नवीन घटनाओं के साथ विम्ब के आधार पर नवीन प्रकारकी रचनाओं का विकसित होना विधा कहलाता है।

मिश्रकाव्य – चम्पू का ही एक नाम है।

1.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

1) संस्कृत वाड्.मय का वृहद इतिहास, सप्तम खण्ड, आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास। प्रधान सम्पादक श्री बलदेव उपाध्याय प्रकाशन– उ0प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊ।

2) संस्कृत वाड्.मय का वृहद् इतिहास। पंचम–खण्ड–गद्य। प्रधान सम्पादक – बलदेव उपाध्याय। प्रकाशन – उ0 प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊ।

1.6 बोध प्रश्न

1. आधुनिक संस्कृत काव्यविधा में पद्य रचना के क्रम में महाकाव्यकारों का उल्लेख कीजिए।
2. नवीन भावों के आधार पर 20 वीं शताब्दी में पद्य–गद्य और नाट्य की रचना विधा पर प्रकाश डालिए।
3. गद्य रचना पर टिप्पणी लिखिए।
4- नाट्य रचना पर टिप्पणी लिखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY